रिकार्ड–तुम्हें पाकर हमने.....ओमशांति प्रातःक्लास 9–4–67

यह किन्होंने कहा कि तुम्हें पाकर सारे जहान की राजाई पा ली। अभी तुम स्टुडेंट भी हो तो बच्चे भी हो। तुम जानते हो कि बेहद का बाप हम बच्चों को विश्व का मालिक बनाने के लिए आये हैं। उनको सामने हम बैठे हैं। अभी हम राजयोग सीख रहे हैं अर्थात् विश्व का क्राउन प्रिंस प्रिंसेज बनने जा रहे हैं अथवा तुम यहां पढ़ने आये हो यह गीत तो भक्तिमार्ग का गाया हुआ है। बुद्धि से बच्चे जानते हैं कि हम विश्व का महाराजकुमार महाराजकुमारी बनेंगे। बाप है ज्ञान सागर। सुप्रीम रुहानी टीचर। रूहों को बैठ पढ़ाते हैं। आत्मा इन शरीर रूपी कर्मेंद्रियों द्वारा जानती है कि हम बाप से विश्व क्राउन प्रिंस–प्रिंसेज बनने लिए इस पाठशाला में बैठे हैं। कितना नशा होना चाहिए। अपने दिल से पूछो इतना नशा हम स्टुडेंट्स में है?यह कोई नई बात भी नहीं है। हम कल्प2 विश्व के क्राउन प्रिस–प्रिंसेज बनने लिए बाप के पास आते हैं। जो बाप, बाप भी है, टीचर भी है। बाप पूछते हैं तो सब कहते हैं हम तो सूर्यवंशी क्राउन प्रिंस–प्रिंसेज वा ल.ना. बनेंगे। अपने दिल से पूछना चाहिए हम ऐसा पुरुषार्थ करते हैं?बेहद का बाप जो स्वर्ग का वर्सा देने आये हैं वो हमारा बाप ,टीचर ,सतगुरू भी है। तो जरूर हमको वर्सा भी उतना उंच ते उंच देंगे। देखना चाहिए कि हमको इतनी खुशी है कि हम आज पढ़ते हैं कल क्राउन प्रिंस होंगे?क्योंकि यह संगम है ना। अभी इस पार हो। वहां तो सर्वगुण सम्पन्न 16कला सम्पूर्ण बनकर ही जावेंगे। हम ऐसे लायक बने हैं?अपने से पूछना होता है। एक नारद भक्त की बात नहीं है। तुम सब भक्त हो। अभी बाप भक्ति दुर्गति से छुड़ाते हैं। तुम जानते हो हम बाप के बच्चे बने हैं। उनसे वर्सा लेना है। विश्व का क्राउन प्रिस बनने योग्य है। बाप कहते हैं भल अपने गृहस्थ व्यवहार में रहो,वानप्रस्थ अवस्था वालों को अपने घर में नहीं रहना होता है और कुमार–कुमारियां भी गृहस्थ व्यवहार में नहीं हैं। उनकी भी स्टुडेंट लाइफ है। ब्रह्मचर्य मे ही पढ़ते हैं। अब यह पढ़ाई है बहुत उंच। इसमें पवित्र बनना है हमेशा के लिए। वो तो ब्रह्मचर्य में पढ़कर फिर विकार में जाते हैं। यहां तुम ब्रह्मचर्य में रहकर पूरी पढ़ाई पढ़ते हो। बाप कहते हैं मैं पवित्रता का सागर हूँ। तुमको भी बनाता हूँ। तुम जानते हो हम आधा कल्प पवित्र रहे थे। बरोबर बाप से प्रतिज्ञा की थी कि क्यों नही हम पवित्र बनकर बनाकर और विश्व का मालिक बनेंगे। कितना बड़ा पाप है। भल है साधारण ;परंतु आत्मा को नशा चढ़ता है कि बाप आये हैं पवित्र बनाने। कहते हैं तुम विकारों में जाते2 वैश्यालय में आकर पड़े हो। तुम सतयुग में पवित्र थे। यह राधा–कृष्ण पवित्र क्राउन प्रिंस–प्रिंसेज हैं ना। रुद्रमाला भी देखो,विष्णु की माला भी देखो। रुद्रमाला सो ही फिर विष्णु की माला बनती है। रुद्राक्ष की माला बनती है तो उसमें आंखें दिखाते हैं। रुद्रमाला का सिर्फ दाना होता है। तो तुम पहले आत्माएं दाने मिसल थीं। फिर शरीर में आने से आंखें मिलती हैं। पहले रुद्रमाला बन फिर विष्णु की माला बनेंगे। इसके लिए पहले तो बाप समझाते हैं कि बाप को निरंतर याद करो। अपना टाइम वेस्ट मत करो। इन कौड़ियों पिछाड़ी पड़कर बंदर मत बनो। बाप ने बंदर एप्स नाम तो रखा है ना। बंदर चने खाते हैं। अभी तुमको बाप रत्न दे रहे हैं। फिर भी अगर कौड़ियों अथवा चनों पिछाड़ी ही जावेंगे तो क्या हाल होगा?रावण की जेल में कैद हो जावेंगे। बाप आकर रावण की कैद से छुड़ाते हैं। कहते हैं देह सहित सभी देह के सम्बंधों का त्याग करो। अपने को आत्मा निश्चय करो। बाप कहते हैं मैं कल्प2 में ही आता हूँ। भारतवासी मनुष्यों को आकर विश्व का क्राउन प्रिंस–प्रिंसेज बताता हूँ। कितना सहज पढ़ाते हैं। ऐसे भी नहीं कहते हैं कि कोई 8/4घंटा आकर बैठो। नहीं, गृहस्थ व्यवहार में रहते अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो तो तुम पतित से पावन बन जावेंगे। विकार में जाने वाले को पतित कहा जाता है। देवतायें पावन थे इसलिए ही तो उनकी महिमा गाते थे। बाप समझाते हैं वो है अल्पकाल क्षरणभंगुर का सुख है। सन्यासी ठीक कहते हैं ;परंतु उनको यह पता नहीं कि देवताओं

को कितने सुख होते हैं। नाम ही है सुखधाम। यह है दुःखधाम। इन बातों का दुनियां में किसको भी पता नहीं है। बाप ही आय कल्प2 समझाते हैं। देही अभिमानी बनाते हैं। अपने को आत्मा समझो। हम आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती हैं। तुम आत्मा हो ना कि देह। देही के तुम मालिक हो। देही तुम्हारा मालिक नहीं। 84जन्म लेते2 अब तुम तमोप्रधान बन गये हो। तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों ही पतित बने हैं। देह अभिमानी बनने कारण तुमसे पाप हुए हैं। अब तुमको देहीअभिमानी बनना है। मेरे साथ वापस घर चलना है। आत्मा और शरीर दोनों को शुद्ध बनाने के लिए बाप कहते हैं मनमनाभव। गीता में भी अक्षर है। बाप ने कब आकर राजयोग सिखाया यह दुनियां नहीं जानती। गाते भी हैं ज्ञान दिन भक्ति है रात। ज्ञान स्वर्ग अज्ञान भक्ति नर्क। बरोबर सतयुग–त्रेता में हम सो देवी देवता थे, फिर हम सो क्षत्रिय बने हैं। फिर रावण राज्य में हम सो वैश्य ,शूद्र बनते हैं। अब फिर बाप आकर हम बच्चों को पढ़ा रहे हैं। समझाते हैं कौड़ियों पिछाड़ी तुम जान नहीं गंवाओ। तुमको रावण से आधा कल्प फ्रीडम (आजादी) दी है। अब फिर फ्रीडम करवा रहे हैं। आधा कल्प तुम फ्रीडम राज्य करो। वहां पांच विकारों का नाम नहीं है। अब श्रीमत पर चलकर श्रेष्ठ बनना है। अपने से पूछो हमारे में विकार कहां तक है। एक तो बाप कहते है कि बस मामएकम् याद करो और कोई भी लड़ाई–झगड़ा भी मत करो। नहीं तो तुम पवित्र कैसे बनेंगे?तुम यहां आये ही हो पुरुषार्थ कर माला में पिरोये जाने लिए। नापास होंगे तो फिर माला में पिरोये तो ना जा सकेंगे ना। कल्प2 बादशाही गंवा देंगे। फिर जन्म में बहुत पछताना पड़ेगा। इस पढ़ाई में भी रजिस्टर रहता है। यह भी पढ़ाई है। सवेरे को उठकर तुम आपे भी पढ़ो। दिन में तो कर्म करना ही है। फुर्सत ना मिलती है। भक्ति भी मनुष्य सवेरे उठकर करते हैं। यह तो है ज्ञान मार्ग। भक्ति में भी पूजा करते2 बुद्धि में फिर किसी ना किसी देहधारी की याद आ जाती है। यहां भी तुम बाप को याद करते हो फिर धंधा याद आ जाता है। जितना बाप की याद में रहेंगे उतना पाप कटते जावेंगे। पुरुषार्थ करते2 जब प्योर बन जावेंगे तब माला बनेगी। पूरा पुरुषार्थ ना किया तो प्रजा में चले जावेंगे। अच्छी रीति योग लगावेंगे,पढ़ेंगे ,अपनी बैग बैगेज भविष्य लिए ट्रांसफर कर देंगे तो रिटर्न में भविष्य में मिल जावेगा। ईश्वर अर्थ देते हैं तो दूसरे जन्म में उसका रिटर्न मिलता है ना। अभी बाप कहते हैं मैं डायरैक्ट आया हूँ। अभी तुम जो कुछ करते हो सो अपने ही लिए। मनुष्य दान–पुण्य करते हैं वो है इनडायरैक्ट। इस समय में बाप की मदद की हुई है तो उसकी प्रारब्ध भक्तिमार्ग तक भी चलती है। इस समय तुम बाप को बहुत मदद करते हो। जानते हो कि यह पैसे तो खतम हो जावेंगे इससे तो क्यों ना बाप को मदद करें। बाप राजाई कैसे स्थापन करेंगे?ना कोई लश्कर वा सेना आदि है ,ना हथियार आदि है। सब कुछ है गुप्त। कन्या को दहेज कोई2 गुप्त देते हैं। पेटी बंद कर चाबी हाथ में दे देते हैं। कोई2 बहुत शो करते हैं। कोई2 गुप्त दे देते हैं। बाप भी कहते हैं तुम सजनियां हो। तुमको हम विश्व का मालिक बनाने आये हैं। तुम गुप्त मदद करते हो। यह आत्मा जानती है। बाहर में भभका कुछ भी नहीं है। कोई समझेंगे क्या कि यह ब्र.कु.किंगडम स्थापन कर रही हैं। तुम ही जानते हो। हथियार आदि कुछ भी नहीं है। भक्तिमार्ग में मनुष्यों की बुद्धि कितनी नानसेंस बन जाती है। यह है ही विकारी पतित दुनियां। 5/6 बच्चे पेट चीर कर पैदा करते हैं तो बंदर–बंदरियां हुए ना। पेट चीर कर बच्चों को निकालने का एक फैशन हो गया है। अभी तो दवाइयां आदि भी निकालते हैं कि बच्चा पैदा ना हो ;परंतु मूत तो पीते–पिलाते रहते हैं ना। कुछ भी करें ;परंतु सृष्टि की वृद्धि तो होनी ही है। आत्माओं को आना है जरूर। जन्म तो और ही जास्ती होते हैं। कहते भी हैं इस हिसाब से अनाज पूरा ना होगा। यह है ही बंदर आसुरी बुद्धि। तुम बच्चों को अभी ईश्वरीय बुद्धि मिली है। भगवान पढ़ाते हैं तो उनका कितना रिगार्ड रखना चाहिए। कितना पढ़ना चाहिए। कई बच्चे हैं जो पढ़ाई का

शौक ही नहीं है। तुम बच्चों को यह तो बुद्धि में रहना चाहिए ना कि हम बाबा द्वारा क्राउन प्रिंस बन रहे हैं। अब बाप कहते हैं मेरी मत पर चलो। बाप को याद करो। बार2 कहते हैं हम भूल जाते हैं। स्टुडेंट कहे हम लेसन भूल जाते हैं तो टीचर क्या करे?याद नहीं करेंगे तो तुम्हारा विकर्म विनाश नहीं होंगे। क्या टीचर सब पर कृपा वा आशीर्वाद करेंगे कि पास हो जाओ। यहां भी आशीर्वाद वा कृपा की बात नहीं है। बाप कहते हैं पढ़ो। भल धंधा आदि करो ;परंतु पढ़ना जरूर है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनो। औरों को भी रास्ता बताओ। दिल से पूछना चाहिए हम बाप की खिदमत में (कितना) हैं। कितनों को आप समान बनाते हैं। त्रिमूर्ति चित्र तो सामने रखा है। यह शिवबाबा है। यह ब्रह्मा है। इस पढ़ाई से यह बनते हैं। फिर 84जन्मों बाद यह बनेंगे। शिवबाबा ब्रह्मा तन में प्रवेशकर ब्राह्मणों को यह बना रहे हैं। तुम ब्राह्मण बने हो। तुम अपनी दिल से पूछो हम पवित्र बने हैं। दैवी गुण धारण करते हैं। पुराने देह को भूले हैं?अब तो पुरानी जुत्ती है ना। आत्मा पवित्र बन जावेगी तो जुत्ती भी फर्स्टक्लास मिलेगी। यह पुराना चोला छोड़ नया चोला लेंगे। यह चक्र तो फिरता रहै। आज पुरानी जुत्ती में हैं। कल यह देवता बनने चाहते हैं। भविष्य आधा जन्म के लिए यह विश्व का क्राउन प्रिस बनते हैं बाप द्वारा। उस हमारी राजाई को कोई भी छीन ना सके। तो बाप की श्रीमत पर चलना चाहिए ना। अपने से पूछो हम कितना याद करते हैं। कितना स्वदर्शन चक्रधारी बनते हैं और बनाते हैं। जो करेंगे सो पावेंगे। बाप रोज पढ़ाते हैं। सबके पास मुरली जाती है। अच्छा, ना भी मिले। 7रोज का कोर्स तो मिल गया ना। बुद्धि में नालेज आ गई। शुरू में तो भट्ठी बनी। कोई पक्के, कोई कच्चे निकल गये ;क्योंकि माया के तूफान भी तो आते हैं ना। 6/8वर्ष पवित्र बने फिर अपने देहअभिमान में आकर घात कर लेते हैं। माया बड़ी दुस्तर है। आधा कल्प माया से हार खाई है। अभी भी हार खावेंगे तो अपना पद ही खो बैठेंगे। नम्बरवार मर्तबे तो बहुत हैं ना। कोई राजा, कोई वजीर ,कोई प्रजा। कोई को हीरे–जवाहरातों के महल। प्रजा में भी कोई तो बहुत साहुकार होते हैं। हीरों, जवाहरों के महल होते हैं। यहां भी देखो प्रजा में कर्जा उठाते हैं। तो प्रजा साहुकार ठहरी या राजा?अंधेरी नगरी.....यह सब अभी की बातें हैं। अब तुम बच्चों को यह निश्चय रहना चाहिए कि हम विश्व का क्राउन प्रिंस बनने लिए पढ़ते हैं। हम बैरिस्टर वा इंजीनियर बनेंगे यह स्कूल में कब भूल जाते हैं क्या?यहां तो चलते2 माया का तूफान लगने से पढ़ाई भी छोड़ देते हैं। बाप बच्चों को रिक्वेस्ट करते हैं कि अच्छी रीति पढ़ो तो अच्छा पद पावेंगे। बाप की दाढ़ी की लाज रखो। तुम ऐसे गंदा काम करेंगे तो नाम बदनाम करेंगे। सत बाप ,सत टीचर की निंदा सतगुरू की निंदा कराने वाले उंच पद पा नहीं सकेंगे। इस समय तुम हीरे जैसा बनते हो तो कौड़ियों पिछाड़ी क्यों पड़ना चाहिए?बाबा को सा. हुआ तो झट कौड़ियों को छोड़ दिया। अरे, 21जन्मों लिए बादशाही मिलती है। फिर यह क्या करेंगे?सब दे दिया। हम तो विश्व की बादशाही लेते हैं। यह भी जानते हो विनाश होना है। अब नहीं पढ़ा तो टू लेट हो जावेंगे। पछताना पड़ेगा। बच्चों को सब सा. हो जावेगा। बाप कहते हैं तुम बुलाते भी हो कि हे पतित–पावन आओ। अब मैं पतित दुनियां में तुम्हारे लिए आया हूँ और तुमको कहता हूँ कि पावन बनो तो फिर तुम बार2 गंद में गिर पड़ते हो। मैं तो कालों को काल हूँ। सबको ले जाउंगा। स्वर्ग में जाने के लिए बाप आकर रास्ता बताते हैं। नालेज देते हैं कि यह सृष्टि चक्र कैसे फिरता है। यह है बेहद की नालेज। जिन्होंने कल्प पहले पढ़ा है वो आकर पढ़ेंगे। वो भी सा. होता रहता है। निश्चय हो जावे कि बाप आये हैं जिस भगवान से मिलने लिए इतनी भक्ति की वो यहां आये हैं तो ऐसे भगवान से हम मुलाकात तो करें। तो कितने हुल्लास, खुशी से भागे आकर मिले,अगर पक्का निश्चय हुआ तो। ठगी की बात नहीं। ऐसे तो बहुत हैं पवित्र बनते नहीं , पढ़ते नहीं। बस, चलो बाबा के पास। बाबा जो कहते हैं मानना चाहिए। मैं जाता हूँ। ऐसे भी ठग घूमने–फिरने आ जाते हैं। ओम।